वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 71 | शुक्रवार 5 जुलाई 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

राज्यपाल मिश्र शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाराज के प्राकट्य महोत्सव में पहुंचे

जयपुर. शाबाश इंडिया। राज्यपाल कलराज मिश्र गुरूवार को मानसरोवर में शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाराज के प्राकट्य महोत्सव में पहुंचे। उन्होंने वहां शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाराज के प्राकट्योत्सव की बधाई निवेदित कर उनका आशीर्वाद लिया। उन्होने इस दौरान स्वामी निश्चलानंद सरस्वती से अध्यात्म की भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों पर चर्चा भी की।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर का दीक्षांत समारोह आयोजित

विश्वविद्यालय किताबी ज्ञान ही नहीं दें बल्कि युवाओं को देश के अच्छे नागरिक प्रदान करें: राज्यपाल

जयपुर. शाबाश इंडिया

राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा है कि शिक्षा ज्ञान का हस्तान्तरण है। विश्वविद्यालय अपने यहां विद्यार्थियों को सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं दे बल्कि युवाओं को देश के अच्छे नागरिक बनाने और एक सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण में भी सहयोग की भावना से कार्य करें। मिश्र गुरुवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावटी विश्वविद्यालय, सीकर के चतुर्थ दीक्षांत समारोह में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि युवा सकारात्मक सोच के साथ अपनी पूर्ण क्षमता से राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनें। उन्होंने कहा कि 'विकसित भारत 2047' की संकल्पना युवाओं पर ही निर्भर है। राज्यपाल मिश्र ने विश्वविद्यालयों में सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए अनुसंधान क्षेत्रों को भी प्राथमिकता देने पर जोर दिया। उन्होंने स्थानीय संस्कृति, अतीत

से जुड़ी वीर गाथाओं, राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में यहां के व्यवसायियों के योगदान आदि विषयों के आलोक में कार्य करने की आवश्यकता जताई। उन्होने कहा कि यह दौर स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा का है। उन्होंने शिक्षा जगत और उद्योग के बीच मौजूद 'आपसी अंतर' को पाटते हुए 'आत्म निर्भर' भारत के लिए कार्य करने का आह्वान किया। मिश्र ने विश्वविद्यालय आचार्यों का भी आह्वान किया कि वे युवाओं को नियमित शिक्षा के साथ-साथ उनमें कौशल के साथ स्वरोजगार व प्रतिस्पर्धात्मक रूप से आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार करे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षण संस्थान अनुसंधान प्रौद्योगिकी के विकास, नवाचार और उद्यमिता की भावना को पोषित करने का भी माध्यम बने। राज्यपाल मिश्र द्वारा कुल 72 विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल से नवाजा गया साथ ही कला संकाय के 82672, विज्ञान संकाय के 40376, वाणिज्य संकाय के 10578, समाज विज्ञान संकाय के 29785, शिक्षा संकाय के 36448 एवं विधि संकाय के 1713 स्नातक एवं स्नातकोत्तर दीक्षार्थियों को उपाधि प्रदान की गई।

गणाचार्य विराग सागरजी महाराज समतापूर्वक हुआ समाधि मरण, जैन समाज में छा गई शोक की लहर

जालना महाराष्ट्र में विधि विधान से हुआ अंतिम संस्कार 2012 में शताब्दी का पहला बीस दिवसीय ऐतिहासिक युग प्रतिक्रमण विराग सागर जी ने संघ की 214 पिच्छियो सहित कराया था जयपुर में। पांच माह में ही जिनशासन के एक और सूर्य अस्त। रात्रि का 2.30 बजे का समय फिर बना काल

जयपुर. शाबाश इंडिया

जिन शासन ने पिछले पाँच माह में ही दूसरे सूर्य का अस्त देख लिया । 17 फरवरी को रात्रि में 2.30 बजे संत शिरोमणि आचार्य विद्या सागर महाराज की समाधि हुई और अब वही रात्रि में 2.30 बजे 4 जुलाई को गणाचार्य विराग सागर महाराज समाधिस्थ हो गये। समाधि के समाचार सुनते ही समाज भाव शून्य हो गया। 350 से ज्यादा दीक्षा प्रदाता विशाल संघ के जननायक परम पूज्य गणाचार्य 108 विरागसागर गुरुदेव की समाधि 4 जुलाई 2024 को प्रातः 2.30 बजे के आसपास जालना (महाराष्ट्र) शहर के नजदीक देवमूर्ति ग्राम, सिंदखेड़ राजा रोड पर हुई है। प्रातः 11 बजे डोला यात्रा जालना के अक्षय मंगल कार्यालय से शुरू हुई जो एक किलोमीटर दूर पाटनी फार्म परिसर पहुची जहां विधि विधान से अंतिम संस्कार किया गया। आचार्य श्री की प्रेरणा से बन रहा विरागोदय तीर्थ पथरिया एक नयनाभिराम क्षेत्र है।

जयपुर के ऐतिहासिक संस्मरण

राजस्थान जैन सभा जयपुर के मंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि मई 2012 में आचार्य श्री के सानिध्य में सीकर रोड पर भवानी निकेतन में एतिहासिक कार्यक्रम शताब्दी का पहला युग प्रतिक्रमण हुआ । बीस दिवसीय युग प्रतिक्रमण एवं यति सम्मेलन कार्यक्रम चला जिसमें 214 साधु साध्वियों ने भाग लिया ।पहली बार हुए इस विशाल आयोजन में मुख्य भूमिका माल चंद रावकां, देव प्रकाश खण्डाका, नेमी चन्द गंगवाल,

महेंद्र सेठी, रुपेन्द्र छाबडा, विनोद जैन कोटखावदा, मनीष बैद, सुनील बख्शी सहित कई सहयोगियों ने निभाई। आचार्य श्री का वर्ष 2012 का चातुर्मास भी जयपुर भट्टारक जी की नसियां में हुआ। इससे पूर्व 125 पिच्छीका के साथ बख्शी जी के चौक में आचार्य श्री का लम्बा प्रवास रहा। 28 मई 2012 को जयपुर में बडी चौपड पर आचार्य श्री के सानिध्य में विशाल सभा हुई।

अस्त हुआ जिन शासन का रवि

राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर को दी विन्यांजलि -देश विदेश के समग्र जैन समाज में फैली शोक की लहर आचार्य विरागसागर महाराज की जालना में हुई समाधि पर जयपुर की कई संस्थाओं के पदाधिकारियों ने नम आंखों से विनयांजलि एवं श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक व्यक्त किया। राजस्थान जैन सभा जयपुर के मंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि राजस्थान जैन सभा जयपुर के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, महामंत्री मनीष बैद, राजस्थान जैन सभा के मंत्री एवं राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा, प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष एडवोकेट सुधान्शु कासलीवाल, श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद जयपुर के अध्यक्ष उमराव मल संघी, श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के कार्याध्यक्ष प्रमोद पहाडियाँ, डॉ शीला जैन, अतिशय क्षेत्र पदमपुरा के मानद् मंत्री एडवोकेट हेमंत सोगानी, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अंचल अध्यक्ष राज कुमार कोठयारी, पदम बिलाला, कमल बाबू जैन, महेश काला, सुनील बख्शी, अशोक जैन नेता, भारत भूषण जैन, चेतन जैन निमोडिया, कमल वैद आदि ने आचार्य श्री के निधन को सम्पूर्ण विश्व के लिए अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि अध्यात्म युग का अन्त हो गया है। जिन शासन के सूर्य का अन्त हो गया है। आचार्य श्री की समाधि से जैन धर्म में सूनापन आ गया है।

जैन संतों ने रखा उपवास

विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि आचार्य श्री के समाधि के समाचारों से जयपुर सहित पूरे देश में प्रवासरत दिगम्बर जैन संतों, आर्यिका माताओं ने भी दिनभर उपवास रखकर विन्यांजलि दी। जयपुर में आचार्य शशांक सागर महाराज, श्री महावीर जी से जयपुर की ओर विहाररत उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज मुनि समत्व सागर महाराज, मुनि शील सागर महाराज, मुनि महिमा सागर महाराज, गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ आदि सभी साधु संतो ने तथा हजारों श्रावकों ने निराहार रहकर दिन भर उपवास रखा। आचार्य श्री के अंतिम संस्कार की क्रियाओं के समय विश्व शांति प्रदायक णमोकार महामंत्र का जाप किया। जैन के मुताबिक आचार्य श्री अपने अंतिम समय में निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव सुधा सागर जी महाराज के सम्पर्क में थे। दो दिन पूर्व आचार्य श्री को हार्ट अटैक आने पर मुनि सुधा सागर महाराज ने विडियो काल के जरिए उन्हें सम्बोधन भी दिया था। मुनि सुधा सागर महाराज पिछले महीने ही आचार्य विराग सागरजी महाराज द्वारा बनाये गये पथरिया के विरागोदय तीर्थ पहुचे थे।

जीवन परिचय

विराग सागर जी' का जन्म 2 मई ,1963 को पथरिया जिला दमोह (म.प्र) मे हुआ था । उनके पिता का नाम श्री कपूरचंद जी (समाधिस्थ क्षुल्लक श्री विश्ववन्ध सागर जी) व माता का नाम श्रीमती श्यामा देवी (समाधिस्थ श्री विशांत श्री माता जी) है। श्री जैन ने बताया कि आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज द्वारा क्षुल्लक दीक्षा 2 फरवरी 1980 ग्राम बुढार ,एवम् आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज द्वारा मुनि दीक्षा 9 दिसंबर 1983 एवमं आचार्य पद8 नवम्बर 1992 सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरी जिला [छतरपुर]) प्राप्त किया।

आचार्य विशुद्ध सागर बने नवाचार्य

आचार्य विराग सागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज को नवाचार्य का पद दिया गया है।

जनजागृति अभियान कपड़े की थैली मेरी सहेली के बैनर का लोकार्पण

महावीर इंटरनेशनल का 50 वा स्थापना दिवस मनाया

गढ़ी परतापुर. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर द्वारा अपेक्स के 50वे स्थापना दिवस पर पायोनियर संस्थान गढ़ी मे एक विशेष आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रीतल पंड्या ने की, मुख्य अतिथि महंत रघुवरदास जी महाराज थे, विशिष्ट अतिथि परेश पंड्या, यतीन उपाध्याय तथा सुभाष चंद्र पंड्या थे। प्रारंभ मे गवर्निंग काउंसिल सदस्य अजीत कोठिया ने महावीर इंटरनैशनल के गोल्डन जुबली आयोजन की जानकारी देकर प्लास्टिक की थैली मेरी सहेली जनजागृति अभियान की जानकारी दी। कोठिया ने सभी से सिंगल यूज प्लास्टिक प्रयोग बंद कर जुट या कपड़े की थैली प्रयोग करने का आह्वान किया। इस अवसर पर महंत रघुवरदास जी महाराज ने महावीर इंटरनैशनल के कपड़े की थैली मेरी सहेली बैनर का लोकार्पण किया। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यालय के 1800 छात्र छात्राओ को सिंगल यूज प्लास्टिक प्रयोग बंद कर कपड़े की थैली प्रयोग करने की शपथ दिलाई। आयोजन संचालन अजीत कोठिया ने किया, आभार प्रीतल पंड्या ने व्यक्त किया।

परम पूज्य मुनि श्री 108 महिमा सागर जी महामुनिराज ससंघ की मंदिर जी में धर्मसभा में विन्यांजलि सभा

जयपुर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य राष्ट्रसंत, भारत गौरव, गणाचार्य, बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य, युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक, उपसर्ग विजेता, महासंघगणनायक, का 4 जुलाई 2024 गुरुवार (चतुर्दशी) प्रातः 2:30 बजे जालना महाराष्ट्र के नजदीक देवमूर्ति ग्राम, सिंदखेड़ा, राजा रोड़ पर समतापूर्वक समाधि मरण हो जाने पर आयोजित की गई। समाधि के समाचार से जैन समाज में शोक की लहर दौड़ गई। धर्म सभा के शुभारंभ में मंगलाचरण श्रीमती मुन्ना देवी सौगानी ने किया ट्रस्ट के मंत्री राजेन्द्र काला ने बताया कि आचार्य श्री का जन्म पथरिया गांव जिला दमोह में 2 मई 1963 को हुआ । बचपन का नाम अरविन्द जैन व पिता कपूर चन्द जी एवं माता श्रीमती श्यामा देवी जी थे। मुनि दीक्षा आचार्य विमल सागर जी से औरंगाबाद में 09.12.1983 को हुई एवं आचार्य पद 08.11.1992 में द्रोणगिरी में दिया गया। आचार्य श्री ने 350 से अधिक मुनि, आर्यिका को दीक्षित किया। आचार्य विराग सागर की समाधि अंतिम डोला दिनांक 04.07.2024 को सुबह 11 बजे अक्षय मंगल कार्यालय, देव मूर्ति, ग्राम सिंदखेड राजा रोड जालना से एक किलोमीटर दूर स्थित पाटनी फार्म परिसर देवमूर्ति ग्राम में हो रहा है। स्वंय की ओर से एवं दुर्गापुरा समाज की ओर से विनयांजलि देते हुए बताया कि आचार्य श्री के आशीर्वाद से वर्ष 2012 में भवानी निकेतन में आयोजित यति सम्मेलन के कार्यक्रम में दुर्गापुरा समाज की परिवार परिचय पुस्तिका के विमोचन हुआ। आचार्य श्री ने स्वयं समाज को हस्त लिखित आशीर्वाद दिया जो परिवार परिचय पुस्तिका में प्रकाशित हुआ है। डॉ मोहनलाल जी मणि ने आचार्य श्री को श्रद्धांजलि देते हुए बताया कि उन्होंने सर्वप्रथम सम्मेद शिखरजी में आचार्य श्री के दर्शन कर पुण्य अर्जित किया आचार्य श्री के दर्शन 8-10 बार करने का अवसर मिला। पंडित अजीत जी शास्त्री ने विनयांजलि में बताया कि आचार्य श्री सम्यक दृष्टि थे अवश्य ही देव गति में लोकांतिक देव से मनुष्य गति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करेंगे। आर्यिका श्री 105 सुग्रीवमती माताजी आर्यिका श्री 105 सुभद्रा मती माताजी ने विनयांजलि में बताया कि यह अनित्य संसार है एक दिन सबको जाना है। जीव की पर्याय बदलती यह निश्चित है, अतः हम उनके आदर्श को अपने जीवन में उतारें।परम पूज्य मुनि श्री 108 महिमा सागर जी महामुनिराज ने संगति पर भजन सुनाया सभी ने उसको साथ मिलकर दोहराया। आचार्य श्री 108 विराग सागर जी महामुनिराज की समाधि पर विनयांजलि में बताया कि आचार्य श्री वात्सल्य की मूर्ति थे। सभी के प्रति विनय रखते थे। मधुर भाषा में प्रवचन से सभी आकर्षित होते थे। उनके दर्शन करने का अवसर पहली बार सम्मेद शिखरजी में मिला। दुखी न होकर हमें मृत्यु महोत्सव मनाना चाहिए। विनयांजलि सभा में महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती रेखा लुहाड़िया, संरक्षक चन्दा सेठी, रितु चांदवाड, रेणु पांड्या व समस्त कार्यकारिणी सहित श्रेष्ठीजन तथा ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द चांदवाड़, उपाध्यक्ष सुनील संगही, कोषाध्यक्ष विमल कुमार गंगवाल, संयुक्त मंत्री महावीर प्रसाद बाकलीवाल, त्यागी व्रती व्यवस्था मंत्री महेन्द्र सेठी उपस्थित थे। मंच संचालन ट्रस्ट के मंत्री राजेन्द्र काला ने किया तथा सभी का आभार व्यक्त किया। अंत में सभी ने आचार्य श्री को नमोस्तु कर णमोकार महामंत्र पढ़ कर जिनवाणी स्तुति की गई।

महावीर इंटरनैशनल उदयपुर के 50 वे स्थापना दिवस पर रक्तदान के लिए जागरूकता अभियान एवं देह दान की घोषणा

उदयपुर. शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनैशनल के 50वे स्थापना दिवस एवं स्वर्णिम वर्ष में प्रवेश पर उदयपुर केंद्र द्वारा विशेष सेवा कार्यक्रम संस्था की स्थापना 4 जुलाई,1975 को जयपुर में हुई थी। और तब से हर साल इस विशिष्ठ दिवस को सभी केंद्र उत्साह के साथ सेवा सप्ताह के रूप में मनाते आ रहें हैं। हम बहुत ही भाग्यशाली है के हमे मौका मिला है की 49 वर्ष पूर्ण कर 50वे वर्ष में प्रवेश कर रहे है। इस 50वे स्थापना दिवस पर सेवा प्रकल्प में आज की युवा पीढ़ी एवं बच्चो के साथ जुड़ कर कदम बढ़ा रहे हैं। इस कड़ी में महाराणा भूपाल चिकित्सालय ब्लड बैंक से डॉक्टर बी.सी. रैगर के सहयोग से आज गुरुवार दिनांक 4 जुलाई 2024 को प्रातः 8:00 बजे महावीर विद्या मंदिर स्कूल, सेक्टर 5, हिरण मगरी, उदयपुर में विद्यालय प्रार्थना सभा में बच्चों को रक्तदान पर मार्गदर्शन प्रदान किया एवं संस्था के कोषाध्यक्ष वीर अशोक खुरदिया एवं वीरा स्वराज जैन द्वारा माला एवं उपरना पहनाकर उनका स्वागत किया गया। अध्यक्ष वीर सुनील गांग

द्वारा बच्चों को जीवन एवं रक्त दान पर प्रेरणा दी एवं युवा वर्ग के बच्चो को शपथ दिलाई की रक्त दान की शुरूवात 18 वर्ष की उम्र के बाद जरूर करे और अगर 18 वर्ष की उम्र से रक्त दान शुरू करेंगे तो 60 की उम्र तक 100 यूनिट आसानी से कर शतक बना सकते है। सचिव वीर रवीन्द्र सुराणा में बताया कि अध्यक्ष सुनील गांग द्वारा अभी तक 56 वर्ष की आयु में 34 बार रक्त दान किया गया और 60 वर्ष की उम्र तक प्रतिवर्ष 4 बार रक्त दान करते है तो 50 यूनिट आसानी से कर सकते हैं और वो भी अर्ध शतक तो बना ही सकते है। महावीर विद्या मंदिर स्कूल से.5 के निदेशक श्री तेजसिंह मेहता द्वारा देहदान की घोषणा पर सभी ने करतल ध्वनि से तालियों द्वारा उनका अभिनंदन किया एवं डॉ. बी. सी.रैगर द्वारा उपर्णा तथा युवा सदस्य वीर नकुल मेहता द्वारा माला पहनाकर बहुमान किया गया। इसी क्रम में महावीर विद्या मंदिर स्कूल, हिरण मगरी, सेक्टर 13, उदयपुर पर प्रातः 9:00 बजे बच्चों को मार्गदर्शन एवं रक्तदान की महत्ता पर जानकारी में बच्चों से सवाल जवाब के माध्यम से जानकारी साजा की गई जिससे बच्चे अपने माता पिता के साथ ब्लड डोनेशन पर उपरोक्त प्रेरणा से जानकारी साजा कर उन्हे प्रेषित कर सकेंगे एवं भविष्य में स्वयं भी 18 वर्ष के बाद रक्तदाता बन कर समाज में अपनी सहयोग यात्रा शुरू कर सके। उपरोक्त दोनो रक्तदान जागरूकता कार्यक्रम में विद्यालय से सभी अध्यापकगण, प्रबंधक, कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग एक संकल्प रहा की वे सभी आगामी रविवार, 14 जुलाई को दोनो संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष निमित स्वैच्छिक मेगा रक्तदान शिविर में रक्तदान कर 500 यूनिट के लक्ष्य को सफल बनायेगे।

वेद ज्ञान

वास्तविक धर्म

इन दिनों धर्म शब्द की गलत व्याख्या कर अनेक लोग इसे सांप्रदायिकता से जोड़कर देखते हैं। गीता में भगवान ने धर्म का तात्पर्य मानवता के प्रति मनुष्य के कर्तव्यों को बताया है। पूरा संसार ब्रह्मांड का हिस्सा है और पूरे ब्रह्मांड में परम ब्रह्म कण-कण में समाया हुआ है। इसका तात्पर्य है कि हर जीव और निर्जीव में एक ही ब्रह्म है। इसीलिए रामचरितमानस में भी कहा गया प्रभु व्यापक और सर्वत्र व्याप्त है। इसीलिए यदि हम सब एक ही ब्रह्म के अंश हैं, तो फिर हम सब एक हैं। फिर कौन अपना कौन पराया। इसीलिए धर्म का असली तात्पर्य है कि बिना स्वार्थ के ऐसे कार्य करना, जिससे सब जीवों का कल्याण हो और ब्रह्मांड के महत्वपूर्ण भाग प्रकृति की भी रक्षा हो। आज के युग में भौतिकता के ज्यादा फैलने से मनुष्य स्वार्थ और मोह के कारण भ्रष्टाचार और अनैतिकता में लिप्त होता जा रहा है। जैसा कि महाभारत काल में कौरवों ने किया था। कौरव स्वार्थवश पांडवों का पूरा राज्य और उनकी पत्नी द्रोपदी को भी छीनना चाह रहे थे। ऐसे समय में भगवान ने धर्म की व्याख्या करते हुए अर्जुन को धर्म का असली अर्थ समझाते हुए कहा था। इस समय तुम्हारे पास शक्ति है और इस शक्ति का उपयोग करके इस समय तुम्हे मानवता के विरुद्ध आचरण करने वाले कौरवों और उनका साथ देने वाले अन्य लोगों को समाप्त करके धर्म की स्थापना करनी चाहिए। इसीलिए कुरूक्षेत्र को धर्म क्षेत्र भी कहा जाता है। हर युग में प्रत्येक मनुष्य को महाभारत जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और वह अर्जुन की तरह अवसाद से ग्रस्त होकर जीवनरूपी महाभारत से पलायन करना चाहता है, परंतु यदि उसे कृष्णरूपी सारथी मिल जाता है तो वह इस युद्ध में सफल हो जाता है अन्यथा वह या तो बुराई और भ्रष्टाचार रूपी कौरवों की सेना में मिल जाता है या विदुर की तरह वनरूपी गुमनामी की तरफ पलायन कर जाता है। भगवान के अनुसार पलायन करना कायरता है और इस कायरता के लिए उसके अंदर आत्मरूपी ब्रह्म उसे कभी क्षमा नहीं करता। ऐसा इसलिए, क्योंकि यदि अर्जुन को भगवान पलायन करने देते तो क्या कौरवों रूपी बुराई संसार से मिट पाती। इसी प्रकार आज के अजुर्नों का भी कौरवों रूपी बुराई के विरुद्ध आज के महाभारत में युद्ध करना चाहिए।

संपादकीय

भारतीय न्याय व्यवस्था...

अपनी किताब द कोर्ट ऑन ट्रायल में अपर्णा चंद्रा, सीतल कलंत्री और विलियम हबर्ड ने भारतीय सुप्रीम कोर्ट के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए डेटा-संचालित दृष्टिकोण अपनाया है। शीर्ष अदालत के दस लाख से भी अधिक मामलों के डेटा-सेट का उपयोग करते हुए इन तीनों ने कई सवालों का उत्तर खोजने का प्रयास किया है। मसलन, क्या हमारी शीर्ष अदालत वास्तव में 'जनता का न्यायालय' है; क्या कुछ व्यक्तियों (बड़े नामचीन वकीलों) का इसके फैसलों पर ज्यादा असर है; क्या रोस्टर-मास्टर के तौर पर प्रधान न्यायाधीश मनपसंद पीठ को अहम मुकदमों को सौंपने की शक्ति के जरिये अपना प्रभाव बढ़ाते हैं; और क्या सेवानिवृत्ति के बाद नियुक्ति का वादा किसी न्यायाधीश के कार्यकाल के अंतिम दिनों के न्यायिक निर्णयों को प्रभावित कर सकता है? इस किताब की कुछ बातों से मैं सहमत नहीं हूं। जैसे, सुप्रीम कोर्ट जनता की अदालत है या नहीं, इसके आकलन के लिए अपनाई गई इनकी पद्धति। लेखक त्रयी ने इस आकलन के लिए मुकदमों को स्वीकृत किए जाने के आंकड़ों को देखा और तर्क दिया कि यह सचमुच लोगों की अदालत है, क्योंकि सुबूत बताते हैं कि न्यायालय ऐसे अधिक मामलों को स्वीकार करता है, जिनमें जीतने की संभावना नहीं होती। मेरी नजर में इस निष्कर्ष पर पहुंचने का यह पेचीदा तरीका

है। सरल रास्ता यह होता कि विशेषाधिकार से रहित लोगों द्वारा दायर मुकदमों की संख्या गिनी जाती, और फिर उनमें से किस अनुपात में मुकदमे स्वीकार किए गए, इसका आकलन किया जाता। हालांकि, इसमें कई जानकारियां ऐसी हैं, जो काफी उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए, सुप्रीम कोर्ट में लंबित मामलों के आंकड़े तो आंखें खोलने वाले हैं। शीर्ष अदालत में दर्ज सभी मामलों में से लगभग 40 प्रतिशत मुकदमे पांच साल से अधिक समय से लंबित हैं, तो वहीं 7.7 फीसदी मामले 10 से भी अधिक वर्षों से लंबित पड़े हैं। हम सब भारतीय कानून प्रणाली की लेट-लतीफी से बखूबी वाकिफ हैं, पर यह कई लोगों के लिए एक झटका हो सकता है कि देश की सबसे ऊंची अदालत भी कुछ मामलों में उच्च न्यायालय जितना लंबा समय लेती है! ये तीनों लेखक बैकलॉग समस्या का समाधान भी सुझाते हैं। उनके मुताबिक, मुकदमों में जिरह पर अनुचित जोर देरी का बड़ा कारण है। जाहिर है, हम मौखिक जिरह से बचते हुए लिखित प्रस्तुतियों से भी फैसले तक पहुंच सकते हैं, खासकर वाणिज्यिक विवाद के मामलों में, जहां निर्णय अक्सर तथ्य की खोज मात्र होता है। ये कुछ ऐसी कमियां हैं, जिनके हम सब इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि हम मानते हैं, यह न्यायिक प्रणाली की अपरिहार्य विशेषता है। यह एक गहरी धारणा है कि जब तक वकील मौखिक जिरह नहीं करेंगे, तब तक न्याय ही नहीं मिलेगा। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कई मामलों में अमेरिकी न्यायाधीश केवल लिखित दलीलों की बिना पर ही मुकदमों का फैसला करते हैं।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

हादसे के सबक

हाथरस में बाबा नारायण साकार के सत्संग में मची भगदड़ में 120 से भी ज्यादा आस्थावान लोगों की मौत दर्दनाक तो है ही, यह हमारे तंत्र और समाज के सभी स्तरों पर आत्मचिंतन का अवसर भी है। विडंबना देखिए, जिन बाबा के दर्शन करने और प्रवचन सुनने आए इतने श्रद्धालु अपनी जान से हाथ धो बैठे, कई सारे जख्मी होकर अस्पतालों में पडे.हैं, वह हादसे के घंटों बाद तक लापता रहे, जबकि उन्हें घायलों की सेवा में जुटना चाहिए था। बहरहाल, संतोष की बात है कि राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे के शिकार लोगों के परिजनों व घायल सत्संगियों से मिलकर उनके आहत मन पर मरहम रखने का काम किया है और इस घटना की न्यायिक जांच कराने की घोषणा की है। जो ब्योरे हैं, वे बताते हैं कि हादसे की वजह भी चिर-परिचित है और नारायण साकार के सत्संग में जुटी भीड़ की प्रकृति भी, मगर उसके ठीक-ठीक कारणों को जानने के लिए न्यायिक जांच के नतीजों का इंतजार करना होगा। आशा है, यह जांच जल्द पूरी होगी और इसमें जिम्मेदारियां भी तय की जाएंगी। दुर्योग से ऐसे त्रासद मौकों पर भी सियासत अपनी निर्ममता नहीं छोड़ती। अभी हाथरस हादसे के सभी मृतकों की शिनाख्त भी नहीं हो पाई थी कि इस पर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप शुरू हो गए। यह पीड़ादायक है। इसलिए पहला सबक तो हमारे राजनीतिक वर्ग को ही सीखने की जरूरत है कि कई बार मर्यादित मौन ज्यादा अभिव्यंजित होती है। दूसरा सबक हमारे शासन-तंत्र के लिए है कि वह स्थानीय प्रशासन को कैसे ज्यादा से ज्यादा संवेदनशील बनाए? भगदड़ की ऐसी घटनाएं लगातार और देश के लगभग सभी हिस्सों में घटती रही हैं, मगर इनके दोषियों को सजा दिए जाने की कोई नजीर याद नहीं आती और जब ऐसी कोई नजीर ही याद न रहे, तो लापरवाही पर लगाम कैसे लगेगी? ऐसा नहीं कि हमारे तंत्र में सामर्थ्य नहीं। करोड़ों की भीड़ वाले कुंभ मेले सुचारू रूप से आयोजित हो सकते हैं, तो फिर हजारों की भीड़ के लिए व्यवस्था बनाने में क्या दिक्कत हो सकती है? सवाल प्राथमिकता और पेशेवर कार्यशैली की है। हमारे तंत्र में आज भी पेशेवराना कौशल की कमी है। देश में ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं कि यदि ईमानदारी से सबक सीखे जाएं, तो जान-माल की पूरी हिफाजत हो सकती है। साल 2004 में आई सुनामी से सीखा गया सबक इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। हमने पड़ोसी देशों के साथ मिलकर एक ऐसा सफल तंत्र खड़ा किया है, जिसके कारण अब चक्रवाती तूफान के आने से पहले ही हम लाखों लोगों को तटीय इलाकों से सुरक्षित स्थान पर ले जा पाते हैं। वैसी ही कोई व्यवस्था हाथरस जैसे आयोजनों के लिए अनिवार्य बनाई जानी चाहिए। यह हादसा संत समाज के लिए भी एक सबक है कि वे अपनी टोली में घुस आए अवांछित तत्वों की पहचान कर उनसे भोले-भाले आस्तिकों को सतर्क करें। यह छिपी हुई बात नहीं है कि धर्म के क्षेत्र में चढ़ावे के अर्थशास्त्र ने कई धनलोलुपों की इसमें घुसपैठ करा दी है। धार्मिक आयोजनों में बढ़ता आडंबर प्रशासन के आगे लगातार चुनौतियां बढ़ाता जा रहा है और आस्था एक ऐसा भावनात्मक मसला है कि कई बार प्रशासनिक अधिकारी चाहते हुए भी सख्ती करने से बचते हैं, ऐसे में धर्म-ध्वजा संभालने वाले लोगों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे शासन और तंत्र की मदद करें, तभी किसी सत्संग को

श्रमणों के चातुर्मास एवं प्रवास के लिए भूमि आवंटन करने को लेकर कार्यशाला आयोजित

जोधपुर. शाबाश इंडिया

अल्पसंख्यक मामलात विभाग जोधपुर द्वारा निदेशालय के निर्देशों की अनुपालना में अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय के श्रमणों (साधु / साध्वियों) के पैदल विहार के समय ठहरने तथा चातुर्मास के दौरान प्रवचन एवं प्रवास के लिए भूमि आवंटन करवाने के लिए जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सतेन्द्र सिंह कर्दम की अध्यक्षता में एक कार्यशाला का अयोजन किया गया जिसमें अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय के विभिन्न संगठनों ने भाग लेकर पृथक - पृथक प्रस्ताव जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी के समक्ष रखे जिस पर जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सतेन्द्र सिंह कर्दम ने जैन समुदाय के सभी प्रतिनिधियों से प्राप्त हुए प्रस्तावों पर चर्चा करके सभी के सहमति से सामूहिक प्रस्ताव तैयार करने के आदेश अपने अधीनस्थ आधिकारियों को प्रदान किए। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी प्रेरणा कछावा ने बताया कि जैन समुदाय के सभी प्रतिनिधियों से प्राप्त हुए प्रस्तावों को तैयार करके जल्द ही जिला कलक्टर एवं निदेशालय अल्पसंख्यक मामलात विभाग भिजवाकर कर जैन समुदाय के श्रमणों (साधु / साध्वियों) के पैदल विहार के समय ठहरने तथा चातुर्मास के दौरान प्रवचन एवं प्रवास के लिए भूमि आवंटित करवाई जाएगी। इस कार्यशाला मे अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय से श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ जय गुरू ब्रज मधुकर संस्थान सूरसागर, श्री मुहताजी मन्दिर ट्रस्ट नागौरी गेट के सामने, राजस्थान समग्र जैन युवा परिषद्, ऑल इण्डिया जैन माइनॉरिटी फाउंडेशन, जैन पोरवाल भाईपा समिति, जैन समाज फलौदी, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन भ्रमण संघीय श्रावक संस्थान, बेरोजगारों की आवाज के प्रतिनिधि शामिल हुए।

युवा समाजसेवी लोहाना को बेस्ट बिजनेस एंटरप्रेन्योर अवार्ड

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्रीनवलराय बूलीदेवी लोहाना चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष व राष्ट्रीय सिंधी समाज के युवा प्रदेशाध्यक्ष अनिल लोहाना को समाज में किए गए उल्लेखनीय कार्यों व समाज की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए बेस्ट बिजनेस एंटरप्रेन्योर के अवार्ड से सम्मानित किया किया। लोहाना को यह अवार्ड सीतापुरा के होटल नोवोटल में हुए समारोह में हैदराबाद की वेडिंग प्लानर राखी कांकरिया, फिटनेस कोच रंजीता जैन, समाजसेवी कन्नू मेहता व शुभ वेडिंग के एमडी राजन कायस्थ व आरती निर्वाण ने प्रदान किया। इस मौके पर लोहाना के अलावा 50 लोगों का विभिन्न क्षेत्रों के लिए सम्मानित किया गया। इस मौके पर पर्यटन को बढ़ावा देने सहित अन्य मुद्दों पर मंथन किया गया। सम्मान प्राप्त करने के बाद लोहाना ने आयोजन समिति का आभार जताते हुए कहा कि आपने जो मुझे सम्मान दिया, उसके लिए मैं आप सभी का तहे दिल से आभार प्रकट करता हूं। समाज को जब-जब भी हमारी जरूरत पड़ेगी, तब तब समाज के उत्थान क लिए हमेशा तन, मन धन के माध्यम से सहयोग करता रहूंगा। साथ ही ट्रस्ट के माध्यम से दीन दुखियां की सदैव सहयोग करता रहूंगा।

महावीर इंटरनेशनल संस्था के स्वर्णिम वर्ष शुभारंभ पर

सेवा सप्ताह के पंचम दिवस जीवदया सेवा मे गौमाता सेवा

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल संस्था सर्वणिम वर्ष शुभारंभ पर सेवा सप्ताह पंचम दिवस बुधवार को सबको प्यार सबकी सेवा जीवो और जीने दो के उद्देश्य सेवा सप्ताह की कडी मे व अमेरिका के शिकागो मे भारत व सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व कर विश्व मे डंका बजाने वाले महान श्रेष्ठ विचारक स्वामी विवेकानंद जी की पुण्य स्मृति दिवस पर संस्था द्वारा जन्म माता, जन्म भूमी के समान पूजनीय गौमाता को समरीयासागर गौशाला पांचवा रोड पर प्रात 8 बजे हरा चारा खिलाकर जीवदया सेवा करते संस्था अध्यक्ष वीर रामावतार गोयल, सचिव वीर अजीत पहाडिया, कोषाध्यक्ष वीर सुरेश कुमार जैन वीर सम्पत बगडिया, वीर सुरेन्द्र सिह दीपपुरा ने सहयौग कर गो सेवा की।

निवाई में मौन जुलूस निकालकर विनयांजलि सभा आज

राष्ट्रीय संत गणाचार्य विराग सागर महाराज का संल्लेखना पूर्वक समाधिमरण के साथ देवलोक गमन, जैन समाज निवाई में शोक की लहर दौड़ गई

निवाई. शाबाश इंडिया। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान मे दिनांक 5 जूलाई शुक्रवार को सुबह 9 बजे श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर जी से मोन जुलूस निकाल कर सन्त निवास नसिंया जैन मंदिर जाएंगे । जहां श्रमण संस्कृति के प्रणेता राष्ट्रीय संत गणाचार्य विराग सागर जी महाराज के संल्लेखना पूर्वक समाधिमरण हो जाने पर सन्त निवास निवाई में विनयांजलि सभा आयोजित की जाएगी। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला ने बताया कि राष्ट्रीय संत गणाचार्य विराग सागर महाराज के देवलोकगमन हो जाने पर निवाई जैन समाज में शोक की लहर दौड़ गई। जौंला ने बताया कि गणाचार्य विराग सागर महाराज का जन्मदिन 2 मई 1963 ग्राम पथरिया में हुआ था। उनका जन्म नाम अरविन्द जैन था उनके दीक्षा गुरु वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमल सागर महाराज थे। उनको 8.11.1992 को द्रोणगिरि तीर्थ क्षेत्र में आचार्य पद दिया गया। उन्होंने पांचवी शिक्षा प्राप्त कर शास्त्रीय शिक्षा ग्रहण की। गणाचार्य विराग सागर महाराज बाल ब्रह्मचारी थे उन्होंने अब तक 3 करोड़ 75 लाख जाप किए। जौंला ने बताया कि प्रकृति से प्रेम करने वाले विरागोदय तीर्थ के संस्थापक गणाचार्य विराग सागर महाराज निरंतर अपने जिनवाणी की साधना करते हुए मोक्ष रुपी का रास्ता अपनाकर देवलोकगमन हुए।

बालाचार्य निपुण नंदी ससंघ के टोंक की ओर बढ़ते कदम...

6 जुलाई को होगा टोंक में भव्य मंगल प्रवेश

टोंक. कासं। परम पूज्य आचार्य 108 इंद्रनंदी जी महाराज के परम प्रभावित शिष्य बालाचार्य निपुणनंदी जी महाराज के ससंघ का मंगल प्रवेश 6 जुलाई शनिवार को प्रातःकाल 8:30 बजे श्री दिगंबर जैन नसिया अमीरगंज टोंक में भाव भव्य मंगल प्रवेश होगा । जैन नसिया में 2024 का चातुर्मास होगा। समाज के प्रवक्ता पवन कंटान एवं कमल सर्राफ में बताया कि बालाचार्य निपुण नंदी जी महाराज के टोंक चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश हो रहा है जो सांगानेर चित्रकूट कॉलोनी से विहार करते हुए पदमपुरा चाकसू निवाई बरौनी सोयला से होते हुए शनिवार को प्रातः काल घंटाघर पर आएंगे जहां से बैंड बाजे के साथ मंगल प्रवेश कराया जाएगा समाज के मंत्री राजेश सर्राफ एवं चातुर्मास समिति के मंत्री धर्मेंद्र पासरोटियां ने बताया मंगल प्रवेश को लेकर जैन नसिया में तैयारी शुरू कर दी गई है।

राजस्थान विश्वविद्यालय महिला संस्था (रूवा), जयपुर के स्वर्ण जयंती समारोह में परिचर्चा का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान विश्वविद्यालय महिला संस्था (रूवा), जयपुर के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर गुरुवार को अध्यक्ष प्रोफेसर शशि लता पुरी के दिशा निर्देशन में राजस्थान विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में लेक्चर सीरीज के अंतर्गत लैंगिक संवेदनशीलता पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के शुरूआत में मनोविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर ओपी शर्मा ने स्वागत संबोधन किया। इस कार्यक्रम में महिला सलाह एवं सुरक्षा केंद्र, अशोक नगर पुलिस थाना की संयोजक एवं मनोविज्ञान के प्रोफेसर, प्रो. प्रेरणा पुरी ने कार्यक्रम का समन्वय किया इसमें विभिन्न गतिविधियों तथा लेक्चर के माध्यम से विभाग के विद्यार्थियों को लैंगिक भेदभाव के प्रति जागरूक किया। कार्यशाला की मुख्य अतिथि तथा रूवा के वाइस प्रेसिडेंट प्रोफेसर बीना अग्रवाल ने लिंग संबंधी रूढ़िवादिता तथा महिलाओं के प्रति होने वाले साइबर क्राइम के प्रति विद्यार्थियों को सजग किया। कार्यक्रम में डॉ सुशीला चौधरी (सह-संयोजक, MSSK) ने महिला सलाह एवं सुरक्षा केंद्र के महत्त्व को समझाया एवं टररङ की कार्यविधि के बारे में विद्यार्थियों को विस्तारपूर्वक बताया। इसके पश्चात रूवा की संयुक्त सचिव डॉक्टर प्रिया ने लिंग आधारित पारंपरिक प्रथाओं तथा लिंग भेद को समझाया। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने बताया कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है, किंतु उन्हें फिर भी संघर्ष का सामना करना पड़ता है समाज में महिलाओं की निर्णयों में सहभागिता एवं जिम्मेदारियों के समान वितरण की नितांत आवश्यकता बताई। कार्यक्रम की अंतिम कड़ी में प्रोफेसर उमा मित्तल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

जैन समाज को एक और गहरा आघात

350 से ज्यादा दीक्षा प्रदाता विशाल संघ के जननायक परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव का समाधी मरण

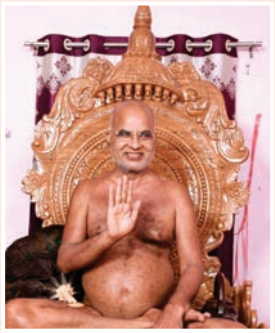

टोंक. शाबाश इंडिया। प. पू. राष्ट्रसंत, भारत गौरव, गणाचार्य, बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य, युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक, उपसर्ग विजेता, महासंघ गणनायक, का जालना महाराष्ट्र के नजदीक देवमूर्ति ग्राम, सिंदखेड़ा, राजा रोड़ परआज 4 जुलाई 2024 को प्रातः काल 3:00 बजे समतापूर्वक समाधि मरण हो गया आचार्य विराग सागर जी महाराज के समाधि मरण की खबर सुनते ही पूरे टोंक शहर में शोक कि लहर दौड़ गई समाज के प्रवक्ता पवन कंटान एवं कमल सर्राफ ने बताया आचार्य श्री को श्रद्धांजलि के लिए जैन नसिया में णमोकार मंत्र का पाठ करके उनको श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर समाज के अध्यक्ष भागचंद फुलेता मंत्री राजेश सर्राफ चातुर्मास समिति के अध्यक्ष धर्मचंद दाखिया मंत्री धर्मेंद्र पासरोटियां कमल आड़रा पप्पू नमक, अनिल सर्राफ, विकास अत्तार, आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की पवन कंटान ने बताया कि आचार्य श्री ने लगभग 350 से अधिक दीक्षाएं दीक्षा प्रधान की है आचार्य विराग सागर जी महाराज का ससंघ जब टोंक 2017 में आया था तब उन्होंने कहा था कि मेरा मन नहीं भरा मैं वापस टोंक आऊंगा और आपको चातुर्मास का सौभाग्य मिलेगा।

JSG Jain Social Groups International Federation Grow more to Serve more

जैन सोश्यल ग्रुप नॉर्थ जयपुर

श्री संतोष-श्रीमती मनिता जैन

सदस्य जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ जयपुर

5 जुलाई' 24

Happy Anniversary

9314682791

की वैवाहिक वर्षगांठ पर

हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

शुभेच्छु

अध्यक्ष: सुनील सोगानी, आई पी पी: राहुल जैन

संस्थापक अध्यक्ष: मनीष झांझरी

पूर्व अध्यक्ष: अभय गंगवाल, पूर्व अध्यक्ष: संजय जैन

उपाध्यक्ष: अजय बड़जात्या, सचिव: विशुतोष चाँदवाड

सह सचिव: महेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष: सुकेश काला

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ, जयपुर

वैशाली नगर स्थित नर्सरी सर्किल के उद्यान में वृक्षारोपण किया

जयपुर. शाबाश इंडिया। वैशाली नगर स्थित नर्सरी सर्किल के उद्यान में सुबह की शुरूआत पर्यावरण के बीच, पर्यावरण के लिए पेड़-पौधे रोपण के साथ पक्षियों के लिए दाना पानी सुचारूरूप से चलाने के उद्देश्य से परिंडे बांधे गए। कार्यक्रम में कई गणमान्य अतिथि ढाकाराम , राज गोलेछा के साथ नवीन भंडारी ट्रस्टी श्रीराम आशापुरन चैरिटेबल ट्रस्ट, राजीव मूसल, आतिश लोढ़ा, सचिन जैन, बसंत जैन, गणपत भंडारी, रणजीत हिरावत, सुनील कोठारी आदी सदस्य उपास्थि रहे। इस कार्यक्रम के संयोजक राजेश सिंघवी को बहुत-बहुत बधाई व साधुवाद। कार्यक्रम के संयोजक राजेश सिंघवी को बहुत-बहुत बधाई व साधुवाद।

श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, मंगलम आनन्दा का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, मंगलम आनन्दा, जयपुर का द्वितीय वार्षिकोत्सव धूमधाम, हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रथम दिन मंदिर में विराजित सभी प्रतिमाओं का पूर्ण भक्ति भाव से अभिषेक व शांतिधारा की गयी कइसके बाद शास्त्री जिनेन्द्र जैन के सानिंध्य में मंत्रोचार के साथ वेदी शुद्दी की गयी और सभी प्रतिमाओं पुनः यथा स्थान वेदी में विराजमान किया गया कअंत में विधि विधान से शिखर पर ध्वजा परिवर्तन किया गया कइस अवसर पर मंगलम आनंदा निवासी श्रेष्ठीगण उपस्थित रहे।

5 जुलाई को राजकीय महाविद्यालय तालेड़ा में रक्तदान शिविर आयोजित

तालेड़ा. शाबाश इंडिया। राजकीय महाविद्यालय तालेड़ा के प्राचार्य डॉ. बृजकिशोर शर्मा की पूज्य माताजी स्व. श्रीमती दुर्गा देवी की 12 वीं पुण्यतिथि पर 5 जुलाई को राजकीय महाविद्यालय तालेड़ा में पुलिस थाने के पास रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसका समय सुबह 10 से शाम 5 बजे तक रहेगा। इस रक्तदान शिविर में रक्तदान करने के लिए महाविद्यालय परिवार के कर्मचारी, प्राचार्य बृजकिशोर शर्मा, रामलक्ष्मण मीणा नर्सिंग ऑफिसर, रक्तवीरों आदि कैम्प ऑर्गेनाइजरो ने बूंदी जिला के युवाओं से आग्रह किया है कि आप ज्यादा से ज्यादा रक्तदान करने के लिए राजकीय महाविद्यालय तालेड़ा में थाने के पास पहुच कर रक्तदान करें,ताकि गर्भवती महिलाओं, थैलेसीमिया मरीजों, एक्सीडेंट मरीजों व जरूरतमंद मरीजों आदि को समय पर ब्लड मिल सके।

विरागोदय रूपी जिनशासन का सूर्य हुआ अस्त : गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

जयपुर. शाबाश इंडिया। परम पूज्य गणिनी आर्यिका 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ सानिध्य में परम पूज्य आचार्य गुरुदेव 108 विराग सागर जी महाराज की सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित की गई। आचार्य श्री की समाधि के दुखद समाचार सुनकर आर्यिका संघ सहित जयपुर जैन समाज दुख के सागर में डूब गया। संपूर्ण जगत को सूरज जैसा प्रकाश देने वाले तेजस्वी कुंज आचार्य भगवन गुरुवर विराग सागर जी महाराज आज हमारे बीच से चले गए। महान आचार्य के इस समाधि पर संपूर्ण भारतवर्ष को उनके तप साधना को कोटिशः नमन। आर्यिका संघ के द्वारा समाधि भक्ति एवं 2 मिनट शांतिपूर्ण णमोकार मंत्र का जाप समस्त जैन समाज के बीच कराया गया। पूज्य माताजी ने गुरु गुणगान करते हुए कहा कि - आज हमारे पास शब्द नहीं है । हमें यह एक स्वप्न सा प्रतीत हो रहा है कि पूज्य गुरुदेव हमारे बीच में नहीं रहे । गुरुदेव उत्कृष्ट साधना के धारक व महान साधक थे । उनकी हर चर्या हम सभी के लिए अत्यंत प्रेरणादायक थी । उनके रोम रोम में वात्सल्य समाया था । बच्चे से लेकर वृद्ध तक चाहे वह अमीर हो चाहे गरीब हो सबके प्रति समान व्यवहार पूज्य गुरुदेव किया करते थे । पूज्य गुरुवर ने कितने तीर्थों का निर्माण कराया जिनमें विरागोदय जैसा तीर्थ रूपी कमल पथरिया के पत्थरों में खिल गया । आज पूज्य गुरुदेव हमारे बीच से चले गए लेकिन जैन समाज को 500 से अधिक चैतन्य कृतियां सौंप करके गए हैं । जिनके माध्यम से जिनधर्म की प्रभावना होती रही गई । पूज्य गुरुदेव के आदर्शों , अनुशासन जो उनने हमें दिये है उनको पूरी कर्तव्य निष्ठा के साथ पालन करेंगे ।

दिगम्बर जैन सोशल ग्रूप फ़ेडरेशन के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

दिगम्बर जैन सोशल ग्रूप फ़ेडरेशन राज़ रीज़न जयपुर के निवर्तमान अध्यक्ष

दिगम्बर जैन सोशल ग्रूप डायमंड के संस्थापक अध्यक्ष

दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल के उपाध्यक्ष

राजस्थान जैन सभा के कार्यकारिणी सदस्य

श्री चन्द्र प्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर चंद्रप्रभु जी ट्रस्ट दुर्गापुरा के पूर्व कार्याध्यक्ष

चन्द्रप्रभ चेरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त सचिव

दिगम्बर जैन महासमिति सांगानेर संभाग के संरक्षक

अन्य अनेक संस्थाओं के सम्मानीय पदाधिकारी

सामाजिक गतिविधियों, धार्मिक कार्यों हेतु समाज का एक जाना पहचाना नाम , व्यवहार कुशल, मधुर भाषी, कर्मठ, जुझारू , अपने व्यक्तित्व में अन्य अनेकानेक खूबियाँ समाहित रखने वाले, हर कार्य को सम्पूर्ण सफलता से सम्पन्न कर सकने की क्षमता रखने वाले आदरणीय भाईसाहब

श्री यश कमल जी अजमेरा

को जन्म दिन की बहुत-बहुत बधाई व आने वाले वर्षों के लिये अनन्त मंगल शुभकामनायें

शुभेच्छु

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फ़ेडरेशन राजस्थान रीज़न जयपुर

नचिकेतन पब्लिक स्कूल के खिलाड़ियों ने राज्य स्तरीय कैरम चैम्पियनशिप में किया गोल्ड मेडल हासिल

रमेश भार्गव, शाबाश इंडिया

ऐलनाबाद। हरियाणा कैरम ऐसोसिएशन द्वारा आयोजित स्टेट एण्ड इंटर डिस्ट्रीकट चैम्पियनशिप में विद्यालय के दो खिलाड़ियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता फरीदाबाद स्थित ऐकलोन इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नॉलोजी में गत 22 से 24 जून तक आयोजित की गई। विद्यालय में ग्रीष्मावकाश के दौरान प्रतियोगिता में कक्षा नौवीं से चंचल ठाकुर ने अण्डर-14 आयु वर्ग व कक्षा आठवीं से जतिन ठाकुर ने अण्डर-12 आयु वर्ग में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में 15 जिलों की अलग-अलग टीमों ने भाग लिया। जिला सिरसा से इस प्रतियोगिता में कुल 16 खिलाड़ियों ने भाग लिया। एक बार फिर इस प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का हुनर दिखाते हुए चंचल ठाकुर व जतिन ठाकुर ने प्रथम स्थान हासिल कर गोल्ड मैडल पर अपना कब्जा जमाया। ग्रीष्मावकाश के उपरांत विद्यालय पहूंचने पर दोनों खिलाड़ियों का भव्य स्वागत किया गया। इस मौके पर विद्यालय निदेशक रणजीत सिंह सिद्धु ने कहा कि जहाँ विद्यार्थी ग्रीष्मावकाश के दौरान मनोरंजन में अपना समय निकाल देते है वहीं इन दोनों बच्चों ने समय का सही उपयोग कर अपनी प्रतिभा का हुनर दिखते

हुए दो स्वर्ण पदक विद्यालय के नाम किए है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों का हौंसला बढ़ाने के लिए विद्यालय हर संभव प्रयास करता आ रहा है और आगे भी करता रहेगा। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की उपलब्धियों से खिलाड़ियों और प्रशिक्षकों पर अच्छा प्रभाव पढ़ता है जिससे वे आगे भी इस प्रकार की उपलब्धियों को हासिल करने में सक्षम हो पाते है। उन्होंने दोनों बच्चों व प्रशिक्षकों को बधाई दी व आगामी खेल प्रतियोगिताओं के लिए शुभकमानाएँ दी।

आज इंसानियत को क्या हो गया?

आज के समय में समझ नहीं आता कि तकनीक को इंसान ने बनाया है या तकनीक ने इंसान को? हम पूरी तरह इसके गुलाम बन गए हैं। इन्हें सड़क किनारे होने वाली दुर्घटनाओं की भी परवाह नहीं है, या बोले कि देखते हुए भी नजरंदाज कर दी जाती है। लोगों की मदद करने के बजाय वे लाइव वीडियो बनाना और रिकॉर्ड करना शुरू कर देते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि तकनीक में हुई प्रगति ने लोगों के एक-दूसरे के साथ बातचीत करने और अपने आस-पास की घटनाओं पर प्रतिक्रिया करने के तरीके भी बदल दिए हैं। स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के प्रचलन ने लोगों की घटनाओं पर प्रतिक्रिया को बदल दिया है। मदद करने के लिए दौड़ने के बजाय, कुछ व्यक्ति घटना को ऑनलाइन रिकॉर्ड करने को प्राथमिकता देते हैं, वो भी सिर्फ इस इंतजार में कि उनके द्वारा पोस्ट करने पर कितने लाइक और शेयर आ रहे हैं। यह व्यवहार चिंताजनक है, क्योंकि यह हमें मानवता से दूर कर रहा है। हालाकि, यह भी पूरी तरह सच नहीं है कि हर कोई इस तरह से व्यवहार करता है, कई व्यक्ति अभी भी जरूरतों की मदद करने को प्राथमिकता देते हैं। जैसे-जैसे तकनीक विकसित होती जा रही है, लोगो के व्यवहार में बदलाव को मेहसूस किया जा सकता है। सहानुभूति, दयालुता रखना भी उतना ही जरूरी है जितना कि अपने आप को तकनीक के साथ अपडेट रखना। एक कमरे में एक साथ बैठने के बाद भी हम सोशल मीडिया पर वीडियो और फोटो शेयर, लाइक और फॉलो करना पसंद करते हैं ना कि आपस में बात करना। लोग तकनीक में गहराई से डूबे हुए हैं और मोहित हैं। इंसानों और इंसानियत को क्या हो गया है? एक बार ये सवाल अपने आपसे पूछना जरूरी है!

आलेख: वैशाली मुद्गल, उदयपुर

मुनिभक्त, मृदुभाषी, कुशल नेतृत्वकर्ता

श्रीमान यशकमल अजमेरा

- दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
- दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फैडरेशन राजस्थान रीजन के पूर्व अध्यक्ष
- राजस्थान जैन सभा जयपुर के कार्यकारिणी सदस्य
- श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्र प्रभू ट्रस्ट दुर्गापुरा के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं वर्तमान कार्यकारिणी सदस्य

को जन्म दिन पर हार्दिक बधाईयाँ व शुभकामनाएं

शुभेच्छु

समस्त मित्रगण एवं परिवारजन

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

आदरणीय श्री राजेंद्र के गोधाजी का पावन स्मरण

(जन्मदिन 5 जुलाई पर)

जन्म के अवसर पर नामकरण उत्सव के समय नामकरण किया जाता है और वही नाम ताउम्र एवं बाद में भी उसका परिचय होता है। सत्यता ये है कि मृत्यु उपरांत व्यक्ति को बॉडी-बॉडी कह कर पुकारा जाता है। कुछ विभुतियां व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिन्हें ताउम्र नाम से ही याद रखे जाते हैं। ऐसे ही एक व्यक्तित्व का उल्लेख आवश्यक है वो ''समाचार जगत'' के संस्थापक श्री राजेन्द्र गोधा जी। ये उनके द्वारा किए गए सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए कार्यों की वजह से है। परमात्मा व्यक्ति के पूर्वजन्मों के अनुसार उनके जन्म का निर्धारण करता है। गोधा जी श्री मूलचंद जी गोधा एवं श्रीमती कमला देवी लदाना वालों के यहां जन्म लिए। दुर्भाग्य से गोधा जी की अल्पायु में ही पिता का साया सिर से उठ गया लेकिन देवी स्वरूपा उनकी माताजी ने पिता-माता दोनों का दायित्व निभाते हुए अपने बच्चों को सुसंस्कार दिए। उनमें से एक गोधा जी दृढ़ निश्चयी और संघर्षों से नहीं घबराने वाले थे। उन्होंने अपने भाई-बहिनों के साथ-साथ अपने स्वपनों को भी सही राह दिखलायी। अपनी युवावस्था में युवा अपने केरियर के विषय में सोचता है। तब गोधा जी ने पत्रकार बनने की सोची और अपने पंखों को परवाज देते हुए अखबार के मालिक बन गए। इतना ही नहीं दैनिक अखबार निकालने में जो कठिनाई आती है उसे दरकिनार करते हुए सांध्यकालीन अखबार भी निकाला। 'समाचार जगत' एवं 'सांध्यकालीन समाचार जगत' ये उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति के परिचायक है। धार्मिक भावनाएं गोधा जी में कुट-कुट कर भरी हुई थी। उनके घर के सामने टोडरमल स्मारक में दर्शन कर अपनी मां के पैर छू अपनी दिनचर्या प्रारंभ करते थे। मां के साथ गोधा जी की सहधर्मिणी श्रीमती त्रिशला जी ने भी गोधा जी का साथ निभाया। शांत रहकर सामाजिक पारिवारिक दायित्वों को निभाया। गोधा जी के निधन पश्चात अखबार की बागडोर संभाली, उनके निर्देशन में अखबार नित्य प्रतिदिन प्रगति कर रहा है। गोधा जी का परोपकारी स्वभाव एवं सहृदयता के कारण उन्हें हमेशा लोगों का सहयोग मिला। महेश जी, गोधा जी के परम आदरणीय थे। अखबार के लिए वो लिखा भी करते थे। गोधा जी ने कभी कार्यालय में छंटनी नहीं की। उसका परिणाम आज भी पुराने लोग उनके कार्यालय में सम्मानजनक पद पर कार्य कर रहे है। जरूरतमंदों की सहायता करते थे। जीवन को उन्होंने कर्मभूमि माना एवं स्वयं को योद्धा। महेश जी के अवसान के बाद एक पारिवारिक सदस्य की भांति मेरा ध्यान रखा। गोधा जी का सबसे बड़ा सरोकार जैन धर्म और संस्कृति को बढ़ावा देना। जैन समाज के किसी उत्सव त्योहार पर बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे, सहयोग करते थे। इसी कारण उन्हें जैन शिरोमणी समाज भूषण पुरस्कार से नवाजा गया। जैन समाज आज भी उन्हें अपना गौरव मानता है। ईश्वर चौरासी लाख योनियों का लेखा जोखा कर मनुष्य योनि के लिए चयन करता है, जन्म-मृत्यु कर्म सभी का निर्धारण। जिंदगी सही चल रही थी, गोधाजी संघर्ष कर रहे थे कि कैंसर जैसी बीमारी ने उनके जीवन पर दस्तक दी। इसे भी गोधा जी ने चुनौती मान सामना किया। स्वयं डॉक्टर्स से बीमारी की चर्चा करते थे। अग्रिम इलाज हेतु बम्बई जाकर इलाज करवा आते थे। जिंदगी का सफर सरल, कठिन, उबड़-खाबड़ रास्तों, खूबसूरत पगडंडियों से बनाए हुए नक्शों पर कई बार ऐसे अचानक मोड़ आते ही वहां व्यक्ति अदृश्य हो जाता है। गोधा जी अपनी मंजिल तलाश रहे थे कि विधाता ने उन्हें हमारी आंखों से ओझल कर अपनी गोद में ले लिया। नेपथ्य में उनके निधन का समाचार ही गूंजा। अपनी संक्षिप्त यात्रा को पूर्ण करके अखबार के मालिक परमपिता मालिक के पास चले गए। चलिए गोधा जी की मधुर यादों को नमन करते हुए उन्हें सदैव सजीव रखने का प्रयत्न करेंगे। सादर नमन। -रुक्मणी शर्मा

श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ प्रबन्ध समिति पार्श्वनाथ भवन में विनियान्जली सभा आयोजित हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया। परम पूज्य गणाचार्य ,ओजस्वी व प्रखर वक्ता, अनुपम साधक, 350 से भी ज्यादा दीक्षा प्रदाता, विशाल संघ के संचालक, जगत कल्याण की भावना से भव्य जीवों को मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हुए उनका कल्याण करने वाले ,ज्ञान मूर्ति, आगम पर्याय, गणाचार्य पूज्य गुरुवर 108 श्री विराग सागर जी महा मुनिराज का समाधि मरण सल्लेखनापूर्वक 4 जुलाई 2024 को प्रातः 2.30 बजे जालना औरंगाबाद के समीप देव मूर्ति ग्राम सिंदखेड ,राजा रोड में हो गया । उक्त जानकारी देते हुए मुनि संघ प्रबंध समिति के प्रचार मंत्री रमेश गंगवाल ने बताया कि दोपहर 1.00 बजे पार्श्वनाथ भवन में विनयान्जलि सभा आयोजित की गई, जिसमें संस्था के मंत्री ओम प्रकाश काला (मामाजी)ने विनियान्जलि अर्पित करते हुए कहा ,परोपकारी गुरुदेव आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी के दिन जिनवर का मार्ग अनुसरण करते हुए इस नश्वर शरीर को छोड़कर स्वर्ग में जा विराजमान हुए हैं। ऐसे गुरुवर मुझे भव भव में मिले जिससे मैं भी उनका अनुसरण करता रहूं, और मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होता रहूं। तेरी ही तस्वीर लगी है दिल के इतने पास तक। तुझको याद रखेंगे गुरुवर अपनी अंतिम सांस तक। अनुज जैन ने विनियांजलि देते हुए कहा, जैन जगत का सूर्य अस्त हो गया है, मुझ पर गुरुदेव की असीम कृपा थी, अपार वात्सल्य था ,इस युग के महान उपसर्ग विजेता संत की स्मृति युगों युगों तक भव्य आत्माओं को अपनी सहनशीलता दृढता विनयशीलता ,गुरु भक्ति मुझे सदैव प्रेरित करती रहेगी। देव प्रकाश खंडाका ने कहा ऐसे गुरुवर के पावन चरणों में त्रिकाल नमोस्तु करते हुए विनयान्जलि अर्पित करता हूं। मुकेश जैन ब्रह्मपुरी ने कहा यति सम्मेलन के प्रणेता गणाचार्य भगवन्त को त्रिकाल नमोस्तु करते हुए विनियान्जलि अर्पीत करता हूं। रमेश गंगवाल ने विनयांजलि अर्पित करते हुए कहा आचार्य सन्मति सागर जी से पूज्य गुरुवर ने क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की थी। और निमित्त ज्ञानी आचार्य भगवान श्री विमल सागर जी गुरुदेव से उनका मोक्ष मार्ग प्रशस्त हुआ था, और उन्हीं के करकमलों से मुनि दीक्षा ग्रहण की थी। जयपुर चातुर्मास में गुरुवर से भरपूर वात्सल्य मुझे प्राप्त हुआ ,चलते-फिरते भगवान थे वे।आज समाधि मरण का समाचार सुनकर अत्यंत वेदना हुई, प्रभु वर्धमान स्वामी से वंदन करता हूं उन्हें पंचम गति प्राप्त हो। सभा के अंत में 2 मिनट का मौन रख णमोकार मंत्र पढ़ते हुए पूज्य गुरुदेव को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। **रिपोर्ट : रमेश गंगवाल**

अरबों काम छोड़कर भगवान के दर्शन करो स्वस्तिभूषण माताजी

केशवरायपाटन. शाबाश इंडिया

परम पूजनीय भारत गौरव गणिनी आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण माताजी के सानिध्य में अतिशय क्षेत्र पर कल्पद्रुम महामंडल विधान चल रहा है जो भक्ति भाव के साथ हो रहा है। गुरुवार की बेला में माताजी ने पूजन भक्ति मंदिर जाने एवं दान करने के साथ त्याग करने की प्रेरणा दी। पूज्य माताजी ने विस्तृत व्याख्या करते हुए बताया कि हम पूजा पाठ स्वाध्याय आदि ये सभी धार्मिक क्रियाएं कर रहे हैं इन सबका एक ही उद्देश्य है अशुद्धि से दूर होना विशुद्धि को प्राप्त करना। विशुद्धि में आनंद है जहां पर राग द्वेष कम होता है जहाँ कषाएं कम होती हैं जहाँ मोह कम होता है जहां जाकर पाप कम हो जाते है। जब कम में इतना आनंद है तो त्याग में कितना आनंद होगा? जब त्याग में इतना आनंद है तो जिनका पूर्ण रूप से छूट चुका है उनको कितना आनंद मिल रहा होगा। जो समवशरण में विराजमान हैं हम उनकी पूजा करने आते हैं कि भगवान जैसे आप बने हो मैं भी आपके जैसा बन जाऊं। देव त्रियंच आदि में एक प्रमुख होता है मनुष्यों में जैसे राजा होता है यथा राजा तथा प्रजा जैसा राजा होता है वैसी प्रजा होती है। माताजी ने कहा अगर राजा धार्मिक है तो प्रजा धर्मी होती है। हमे मंदिर प्रतिदिन आना चाहिए। सौ काम छोड़कर दान करो हजार काम छोड़कर ध्यान करो करोड़ काम छोड़कर पूजा करो और अरबों काम छोड़कर भगवान के दर्शन करो।

चेतन जैन पाटन से प्राप्त जानकारी के साथ अभिषेक जैन लुहाड़िया रामगंजमंडी की रिपोर्ट

आखिर योग का उद्देश्य क्या है? योग किसको करना चाहिए?

योग भारत की एक प्राचीन जीवन शैली है। यह जीवन जीने का एक उत्तम तरीका है। भारत के द्वारा दी गई यह एक अमूल्य देन है। आज पूरा विश्व इसे सहर्ष अपना रहा है। वठड भी इसे मान्यता दे चुका है। प्रत्येक 21 जून को योग दिवस मनाया जाता है। आध्यात्म तथा स्वास्थ्य दोनो के लिए योग जरूरी है। प्रस्तुत लेख मे बताया जायेगा कि योग कौन कर सकता है और योग का उद्देश्य क्या है? प्राचीन भारत मे योग केवल गुरुकुलों, आश्रमों तक सीमित था। उस समय यह आध्यात्म के लिए ही किया जाता था। कालांतर मे यह राज-परिवारों मे आया। उसके बाद योग आम जन में आया। योग को आम जनमानस तक पहुँचाने का श्रेय कई ऋषि-मुनियों को जाता है। इन मे महर्षि पतंजली का योगदान मुख्य है। आधुनिक समय मे योग आध्यात्म तथा स्वास्थ्य दोनो के लिए किया जाता है। योग करने का उद्देश्य चाहे 'आध्यात्म' हो या 'स्वास्थ्य', यह सदैव लाभकारी है। यह हमारे शरीर व जीवन दोनो को प्रभावित करता है। अब प्रश्न यह पूछा जाता है कि योग का उद्देश्य क्या है? आज योग का प्रचलन पूरे विश्व मे है। पूरे विश्व मे योग 'आध्यात्म' के लिए तो किया ही जाता है। लेकिन आम जनमानस में इसे शारीरिक फिटनैस और उत्तम स्वास्थ्य के लिए ही किया जाता है। कुछ लोगों के मन मे यह प्रश्न उठता है कि क्या हम योग कर सकते है? योग कौन कर सकता है?

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय
आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान
विधानसभा,जयपुर। 9828011871

यह प्रश्न मुख्यतः तीन बिंदुओं पर उठता है।

धर्म Religion.
आयु Age.
स्वास्थ्य Health.
इन तीनों बिंदुओं को क्रमवार समझते हैं।

1. धर्म Religion

धार्मिक आशंका :- कुछ धर्म के मानने वाले लोगों के मन मे योग को लेकर आशंका रहती है। उनको यह आशंका रहती है कि योग करने से उनकी 'मजहबी' भावनाएँ आहत हो सकती हैं। लेकिन उनकी यह आशंका सही नहीं है। क्योकि योग किसी धर्म या मजहब का ना तो विरोध करता है, ना किसी का प्रचार करता है। योग मानव कल्याण के लिए है। यह सभी को शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य देता है।

योग सब के लिये है:-

कुछ लोग दुर्भावनावश योग के विरुद्ध दुष्प्रचार करते हैं। लेकिन यह गलत है। योग सब कर सकते हैं। योग सब के लिये है। योग जाति, धर्म व देश की सीमाओ से परे है।

योग एक 'विज्ञान' है :-

यह सही है कि योग सनातन है। इसे ऋषि तथा मुनियों ने अविष्कृत और परिभाषित किया है। लेकिन योग कही भी किसी धर्म का विरोध नही करता है। यह विशुद्ध रूप से शरीर विज्ञान है। योग मे सभी क्रियाएँ शरीर, मन व प्राण को सुदृढ करने के लिये है।

मानव कल्याण के लिए है योग :-

इसलिए यदि आप किसी भी 'धर्म' या 'मजहब' को मानते हैं, आप योग कर सकते हैं। यह मजहबी नही बल्कि, शरीर विज्ञान की क्रिया है। योग आप को शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य तो देता ही है, यह मनुष्य का नैतिक उत्थान भी करता है। इसका उद्देश्य मानव कल्याण है।

2. आयु Age.

यह प्रश्न भी उठाया जाता है कि किस आयु मे योग करे, और किस आयु मे योग न करें। इस का उत्तर है कि योग हर आयु वर्ग के लोग कर सकते हैं। बच्चे, युवा, प्रौढ, या वृद्ध योग सभी कर सकते हैं। लेकिन आसन और प्राणायाम करते समय जो सावधानियाँ बताई जाती हैं, उनका ध्यान रखा जाना चाहिए।

बचपन:

योग का आरम्भ बचपन से हो जाए, यह बहुत उत्तम है। 9-10 वर्ष की आयु के बच्चों को सरल आसन प्राणायाम आरम्भ करवा देना उत्तम है। आरम्भ मे सूर्यनमस्कार आसन और अनुलोम विलोम प्राणायाम बच्चों के लिए सही है। धीरे धीरे अभ्यास को बढ़ाये।

युवा अवस्था:

इस आयु मे योग करना बहुत जरूरी है। यदि आप युवा अवस्था मे योग आरम्भ कर देते हैं तो यह अधिक लाभकारी है। क्योकि इस अवस्था मे आप लगभग सभी आसन व प्राणायाम कर सकते है। युवाओ के लिए योग इस लिए भी जरूरी है क्योकि उनको अधिक परिश्रम करना होता है। यदि युवा अवस्था मे योग आरम्भ कर दिया जाता है तो वृद्धावस्था तक कोई परेशानी नही आती है। आसन आपके शरीर को तथा प्राणायाम आपके प्राणों व श्वसनतंत्र को सुदृढ रखते हैं।

वृद्धावस्था:

जो व्यक्ति युवा काल से योग करते आ रहे है उनको इस अवस्था मे योग के अभ्यास मे कोई कठिनाई नही आती है। वे आसन व प्राणायाम सरलता से कर लेते हैं। ऐसे योग साधक जानते है कि उनको कोनसे आसन व प्राणायाम करने हैं। फिर भी उनको यह सलाह दी जाती है कि आसन व प्राणायाम अपनी क्षमता के अनुसार करें। जिस आसन को करने मे सुख की अनुभूति हो वह आसन अवश्य करें और उसकी पूर्ण स्थिति मे पहुँच कर कुछ देर रुकें। जो व्यक्ति अपने युवाकाल मे योग न कर सके हो क्या वे योग कर सकते हैं? हां, ऐसे व्यक्ति भी योग कर सकते हैं। लेकिन उनको कुछ सावधानियों का ध्यान रखना चहाए। जो व्यक्ति इस आयु मे योग करना चहाते है उनको कठिन आसन बिलकुल नही करने चाहिए। सरलता से किये जाने वाले आसन करें। जिस आसन को करने से तनाव आये वह बिलकुल न करें। हाथ पैरो को धीरे-धीरे हिलाना, धीरे-धीरे आगे-पीछे झुकना, वाकिंग करना, ये आपके लिये अच्छे व्यायाम है। यदि श्वास रोग या हृदय रोग है तो प्राणायाम मे कुम्भक न लगाये। अनुलोम विलोम आपके लिये उत्तम है। ध्यान की क्रिया आपके लिए श्रेष्ठ है। आसन व प्राणायाम अपने शरीर की अवस्था के अनुसार करे तथा प्रशिक्षक की देख-रेख में करें।

3. स्वास्थ्य Health.

तीसरा बिन्दु आता है स्वास्थ्य का। क्या एक अस्वस्थ व्यक्ति योग कर सकता है? योग करते समय अपनी शारीरिक स्थिति का अवलोकन अवश्य करें। यह ध्यान रहे कि योग ''स्वस्थ व्यक्ति के लिए है'' तथा ''व्यक्ति को स्वस्थ रखने के लिए है''। नियमित योग करने वाला व्यक्ति स्वस्थ रहता है। लेकिन गम्भीर रोग की अवस्था मे, शरीर की सर्जरी होने की स्थिति मे आसन नही करने चहाए।

श्वास रोग या हृदय रोग है तो प्राणायाम मे कुम्भक न लगाएं। यदि श्वासों की स्थिति ठीक नही है तो प्राणायाम न करें। प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति योग कर सकता है। अस्वस्थ व्यक्ति ठीक होने के बाद ही योग करे।

योग का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

योग का प्रमुख उद्देश्य मानव कल्याण है। योग मूल उद्देश्य आध्यात्म तो है। इसके साथ स्वास्थ्य, मानसिक शाँति, नैतिकता व अनुशासन भी योग का उद्देश्य हैं।

1. आध्यात्म:

निश्चित तौर पर यह कहा जा सकता है कि योग का उद्देश्य आध्यात्म तो है। लेकिन किसी धर्म का प्रसार या विरोध करना इसका उद्देश्य बिलकुल नही है। मुख्यतः योग का उद्देश्य आध्यात्म ही है। यह कोई पूजा पद्यति नही है। यह क्रिया 'शरीर' को तथा 'स्वयं' को जानने की विधि है। यह 'स्वयं' को 'स्वयं' से जोडने की क्रिया है। ध्यान और समाधी योग का अंतिम पडाव है। लेकिन इसके लिए शरीर का स्वस्थ होना जरूरी है। इसी लिए पहले आसन व प्राणायाम किये जाते हैं। योग मन को नियंत्रित (कंट्रोल) करने का काम करता है। यह मन को बहमुर्खी से अंतरमुखी करता है। पतंजली योगसूत्र मे बताया गया है-- 'योगश्चितवृति निरोधः।' यह चित्त की वृतियो का निरोध करता है।

2. शारीरिक स्वास्थ्य:

शरीर का स्वास्थ्य ही योग का उद्देश्य है। योग मुख्य उद्देश्य मन को नियंत्रित करना और शरीर को ध्यान की स्थिति मे ले जाना है। लेकिन इसके लिए शरीर और मन का स्वस्थ होना जरूरी है। आधुनिक समय मे यदि ध्यान और समाधी आप का उद्देश्य नही है तो भी योग आप के जरूरी है। योग आपके शरीर की रोग प्रति रोधक क्षमता को बढ़ाता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पहले आसन करे और आसन के बाद प्राणायाम करें। आसन आपके शरीर को पुष्टि देते है। आसन शरीर के सभी आंतरिक अंगो को प्रभावित करते है। इस के प्रभाव से शरीर का रक्तचाप तथा सुगर सामान्य रहते है। शरीर का राशायनिक निर्माण का बैलेंस बना रहता है। प्राणायाम हमारे शरीर के श्वसनतंत्र को सुदृढ करता है। इस क्रिया से हमारे LUNGS सक्रिय होते है। शरीर को Oxygen पर्याप्त मात्रा मे मिलती है। हृदय को पुष्टि मिलती है। इस क्रिया से प्राण शक्ति में वृद्धि होती है।

3.मानसिक शान्ति :

मन का शरीर से सीधा सम्बंध है। यदि मन स्वस्थ है तो शरीर स्वस्थ है, और शरीर स्वस्थ है तो मन स्वस्थ स्वस्थ है। मन नियंत्रित करना योग का उद्देश्य है। अस्वस्थ शरीर मन को प्रभावित करता है। चित्त की अस्थिरता मानसिक शान्ती के लिए बाधक है। योग इसी पर केन्द्रित है। योग से शारीरिक फिटनैस के साथ मानसिक शान्ती भी मिलती है।

4. नैतिकता:

योग मे यम और नियम मे नैतिकता के बारे मे बताया गया है। योग मनुष्य का चरित्र निर्माण करता है। योग से क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष का त्याग होता है। योग अहिंसा अपनाने को प्रेरित करता है और बंधुत्व का भाव जागृत करता है।

5. अनुशासन:

योग हमें अनुशासित करता है। योग में अनुशासन बहुत महत्व रखता है। समय पर सोना-जागना, नियमित योगाभ्यास, संतुलित खान-पान ये सब योग के पार्ट है।

लेख सारांश:

योग जाति, धर्म, व देश की सीमा से ऊपर है। योग सब कर सकते है। योग का उद्देश्य शारीरिक स्वास्थ्य है।